विचार बिन्दु

पराधीनता समाज के समस्त मौलिक निमयों के विरुद्ध है। –मान्तेस्क्यु

चट मंगनी पट ब्याह जैसा है विज़न 2030 दस्तावेज बनाना

सत्ता में बैठे नेताओं को चुनावों से ठीक पहले प्रदेश के चहुंमुखी विकास एवं प्रदेशवासियों की खुशहाली एवं उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का संकल्प याद आया है। यह भी याद आया है कि इसके लिए सरकार को यह प्रयास करना है कि राजस्थान वर्ष 2030 तक देश का अठाणी राज्य बने। अपने पांच साल के कार्यकाल के साढ़े चार वर्ष बीत जाने पर राज्य सरकार को अब लगा है कि भावी राजस्थान का नक्शा बनाया जाए। वे इसे विज़न 2030 दस्तावेज कह रहे हैं। सरकारी घोषणा कहती है कि राज्य को देश का अठाणी राज्य बनाने हेतु हर क्षेत्र के लिए मानकों के निर्धारण एवं इन मानकों को प्राप्त करने हेतु संकल्पबद्ध कार्ययोजना तैयार किये जाने के लिएराज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री की आर्थिक सुधार सलाहकार परिषद के नेतृत्व में यह दस्तावेज तैयार किया जा रहा है। अचानक आई इस याद पर काम करने का जबरदस्त प्रचारसरकार शासन तंत्र की मदद और राजकोष के धन से करके यह जताने का प्रयास कर रही है कि वह राज्य के विकास के प्रति कितनी जागरूक और समर्पित है! सरकारी घोषणा कहती है कि ''यह आवश्यक है कि इस दस्तावेज में प्रदेश के प्रबुद्धजनों, विषय विशेषज्ञों, हितधारकों, युवाओं एवं समाज के सभी वर्गों के सुझावों एवं प्रदेशवासियों की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं को सम्मिलित किया जावे।'' इसलिए लोगों की राय जानने के लिए राज्य में 15 अगस्त से अभियान चलाया जा रहा है जो 30 सितंबर तक चलेगा। इसे ''राजस्थान-मिशन 2030 अभियान नाम दिया गया है। लोग चिट्ठी लिख कर, ईमेल करके, और इसके लिए बनाए गए पोर्टल पर लोग अपने सुझाव दे सकते हैं। इसके लिए शासन तंत्र स्कूलों में बच्चों की निबंध प्रतियोगिताएं करा रहा है तो राहगीरों तक से फटाफट कागज काले कराए जा रहे हैं। इस भरे पूरे आयोजन के लिए सरकारी वेबसाइट पर बताया गया है कि राजस्थान-मिशन 2030 अभियान के अन्तर्गत जो प्रमुख गतिविधियां संचालित की जायेंगी उनमें शामिल हैं: इस मिशन के उद्देश्यों एवं अपेक्षाओं के बारे में मुख्यमंत्री द्वारा संबोधन, तथा उनका विभिन्न हितधारकों/प्रभावशाली समूहों के साथ संवाद/मुलाकात, आमजन से ऑनलाइन अपेक्षाएं/विचार/सुझाव आमंत्रित करना, विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों से इस संबंध में ऑनलाइन विचार/ सुझाव आमंत्रित करना, विभागीय स्तर पर संबंधित हितधारकों के साथ गहन परामर्श करना, फेस टू फेस सर्वे करना, आईवीआर सर्वे करना, स्कूलों/कॉलेजों में मिशन 2030 के लिए लेख प्रतियोगिताएं आयोजित करना, वीडियो कॉन्टेस्ट कराना, विभागों द्वारा विभागीय मिशन दस्तावेज - 2030 के प्रारूप तैयार करना, विभागीय मिशन दस्तावेजों का सेक्टर-वाईज प्रकाशन करना तथा अंत में राज्य के विजन-2030 दस्तावेज को जारी करना। यह समय के विरुद्ध रेस है क्योंकि चुनाव आचार संहिता लगने से पहले यह अभ्यास पूरा करना है ताकि लोग इस सपने को लेकर मतदान केंद्रों पर पहुंचें।

सरकार के प्रमुख, जिनके चेहरे पर सारा सरकारी प्रचार हो रहा है, वे एक विशेष प्रकार का पट्ट गले में डाले आश्वस्त लगते हैं कि चट मंगनी पट ब्याह की तरह 2030 का विज़न दस्तावेज़ बना दिया जाय तो अन्य राहतों की बरसात में वोटों की खेती की अच्छी फसल लेने के लिए यह खाद का काम कर सकता है। यह प्रयास भी है कि प्रचार के मुलम्मे में सत्ता में चल रही वर्चस्व की बदसूरत जंग छुप जाये और हर एक के हाथ में राहत का ऐसा झुनझुना पकडा दिया जाये जिसकी खनखनाहट में आम जन के दर्द की कराहटें सुनाई न पडे। व्यक्तिगत प्रचार के लिये सरकारी संसाधनों का भरपूर राजनीतिक उपयोग इस प्रकार हो रहा है जैसे राजकोष सत्ता में बैठे राजनेताओं की निजी गुल्लक है। राजस्थान में सत्ता बरकरार रखने की कोशिश में 'ब्रांड गहलोत' तैयार किया गया है जिसका अंतर्निहित भाव सत्तारूढ पार्टी के भीतर या बाहर उनकी हर प्रकार की चुनौती को खत्म किया जाए। मैं तुम्हें राहतें देता हूं तुम मुझे वोट देना व्यापारिक सौदा करने जैसा है। मतदाताओं से आशा की जा रही है कि सरकार से प्राप्त लाभों के लिए वे अपना वोट देकर अहसान से उऋण हों। फ्रेंचाइजी मोड ने नेताओं की भौतिक लाभ की भूख भी बढ़ा दी है और दिखावे की नैतिक राजनीति को भी ताक पर रख दिया गया है। राहतों के नाम पर कैश, सामठी और सब्सिडी देकर वोटों का प्रबंधन करने की कोशिश है। इसे आर्थिक विश्लेषक गैर-कॉर्पोरेट प्रकार के पूंजीवाद का मॉडल बताते हैं।

यदि कोई पूछे कि ये बातें सरकार को अपने कार्यकाल के अंत समय में ही क्यों सूझती है तो प्रचारतंत्र इतना शोर मचाता है कि सवाल सुनाई ही नही पड़ता। इस सवाल को भी नज़रंदाज़ कर दिया जाता है कि राज्य के प्रशासन तंत्र को आम जन के प्रति जिम्मेदार बनाने के लिए मुख्यमंत्री को जवाबदेही कानून बनाने की अपनी ही घोषणाएं और वादे क्यों याद नहीं आए!

राजस्थान विज़न 2030 के लिए, मुख्य सचिव के अनुसार, ढाई करोड़ से अधिक सुझाव मिल भी चुके हैं। प्रशासन तंत्र की मुखिया का कहना है कि सारगर्भित सुझावों को विजन दस्तावेज में शामिल किया जाएगा। जन कल्याण एप के माध्यम से फेस-टू-फेस सर्वे भी किया जा रहा है जिसके तहत लगभग डेढ़ करोड़ से अधिक प्रदेशवासियों तक पहुँच गया है। जिस संख्या में सुझावों का मिलना बताया गया है उसके हिसाब से तो 30 सितंबर तक उनकी संख्या शर्तिया तीन करोड़ से ऊपर पहुंच जाएगी। इसे हम लोकतंत्र में जन भागीदारी मान लें तो अब गेंद सरकार के पाले में है। तीन करोड़ से अधिक सुझावों को आर्थिक सुधार सलाहकार परिषद के नेतृत्व में कौन सारणीबद्ध करेगा, कौन पढ़ेगा और कौन उनका सार निकाल कर उनको विज़न दस्तावेज में शामिल करने के लिए छांटेगा? यह काम आनन-फानन में कुछ दिनों में नहीं हो सकता। मगर सरकारी तंत्र कुछ भी कर देने का जादू दिखा सकता है। बेहतर होता मुख्यमंत्री पहले खुद बताते कि उनका अपना विज़न क्या है या अपनी पार्टी से विजन दस्तावेज का प्रारूप बनवाते उसे सर्वजनिक करते और उस पर लोगों से राय मांगते। इस अभ्यास से लगता है उनकी स्लेट कोरी है और उस पर क्या लिखना है वह लोगों से पूछा जा रहा है। विजन के पहले उसका दर्शन आवश्यक होता है जिससे पता चले कि किस आधार पर 2030 में पहुंचने का सपना देखा जाए। लेकिन यहां तो जुगाड़ है।

आज हमारे राजनेताओं तथा प्रशासन तंत्र में एक ही सोच दिखता है कि प्रचार के जरिए किस प्रकार लोगों के विचारों पर नियंत्रण रखा जाए। गांव स्तर से लगा कर राजधानी तक सब जगह यही हाल है। सभी इसे साधने में लगे हैं। कानूनों को कैसे नज़रंदाज़ किया जाए या उनका दुरुपयोग कैसे किया जाए। हर जगह निहित स्वार्थों का बोलबाला है। रोज भ्रष्टाचारियों को पकडे जाने की खबरें आती है मगर किसी को कानून का भय सताता नज़र नहीं आता। अब तो भ्रष्टाचार में पकड़े जाने पर सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी असर नहीं होता। रिश्वत लेने वालों की निगाहें नीची नहीं होती, उनमें गजब का आत्मबल दिखता है। पहले गली मोहल्लों में ही दादा होते थे राजनीति के लोग उनसे कभी कभार मदद ले लिया करते थे। अब वे दादा खुद ही राजनेता बनने लगे हैं। ऐसे में लोग क्या करें? वे इन्हें रॉबिनहुड मान कर अनेक बार सांविधानिक संस्थाओं में भेज देते हैं। आपराधिक मामलों का सामना करने वाले निर्वाचित प्रतिनिधियों की सूची देखने पर अब किसी को आश्चर्य भी नहीं होता। कोई भी इनके सामने खडा होने की हिम्मत नहीं करता क्योंकि राज में जाने और बने रहने के लिए इनकी मदद लेनी होती है। भ्रष्टाचार अब लोकतान्त्रिक संस्थाओं के अस्तित्व को ही संकट में डालने की कगार पर है। हालात किसी के नियंत्रण में नहीं है। भ्रस्टाचार का एक परनाला बंद करते हैं तो पाते हैं कि उसने तो नई नलियां बना ली है।

मगर चुनाव सत्ता में बैठे नेताओं को लोक हित में कुछ करने के लिए बाध्य करते हैं, और यह लोकतंत्र का मजबूत पहलू है। किसी भी लोक कल्याणकारी सरकार को अपने राज्य को अग्रणी बनाने का सपना होना ही चाहिए। जनता इसी आस में हर पांच साल में एक बार मतदान केंद्रों पर जाकर अपने प्रतिनिधि चुनती है। आम आदमी के सपने को यदि विजन 2030 बनाया जाए तो वह एक ऐसा आधुनिक, सुखीऔर समृद्ध राजस्थान होगा जहां समृद्धि और सुविधाओं का लाभ राजनेताओं के साथ गठजोड़ करके बाजार की आवारा ताकतें नहीं चुरा पायेंगी; सरकारी स्कूलों के बच्चों को आलीशान निजी स्कूलों जैसी भौतिक सुविधाएं भले ही न मिले मगर वहां शिक्षकों के सैकडों पद खाली न रहेंगे और वे पूरे समय स्कूलों में उपलब्ध रह कर बच्चों की पढ़ाई पर मेहनत करेंगे; सरकारी अस्पताल और डिस्पेंसरियां पांच सितारा होटलों जैसे निजी अस्पतालों की इमारतों की नकल नहीं करेंगी मगर वहां चिकित्सक और अन्य स्टाफ ईमानदारी तथा सेवा भावना से काम करते मिलेंगे; नागरिक सुविधाएं सिंगापुर जैसी भले न हों मगर शर्मनाक भी नहीं होंगी; किशोर छात्रों की आत्महत्याओं, बलात्कारों, जाति और संप्रदाय की हिंसा और दुर्घटनाओं की खबरें रोज पढ़ने को नहीं मिलेंगी और राजस्थान के आम जन को सरकारी सेवाओं में सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से निजात मिलेगी। यह कोई नया विजन नहीं है। हम रियासती राजस्थान से गणतांत्रिक राजस्थान बनने के समय से ही यह सपना देखते आए हैं। चुनाव घोषणापत्रों में भी विजन ही होता है जिसे पाने के लिए प्रत्येक पार्टी सत्ता पर काबिज होने के लिए चुनाव में नागरिकों का मत पाना चाहती है। ऐसी बातें चुनाव के समय में अधिक मुखर हो उठती है। यदि कोई पूछे कि ये बातें सरकार को अपने कार्यकाल के अंत समय में ही क्यों सूझती है तो प्रचारतंत्र इतना शोर मचाता है कि सवाल सुनाई ही नही पडता। इस सवाल को भी नज़रंदाज़ कर दिया जाता है कि राज्य के प्रशासन तंत्र को आम जन के प्रति जिम्मेदार बनाने के लिए मुख्यमंत्री को जवाबदेही कानून बनाने की अपनी ही घोषणाएं और वादे क्यों याद नहीं आए!

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

उत्तम मार्दव धर्म अर्थात् विनयशीलता, कोमलता, मृदुता का भाव होना

भागचंद जैन मित्रपुरा

जैन धर्म के दशलक्षण धर्म आत्मा के स्वाभाविक धर्म है। ये दस धर्म सार्थक जीवन जीने के अभिन्न अंग है। आज द्वितीय दिवस - उत्तम मार्दव धर्म दिवस है।

मार्दव अर्थात् विनयशील होना, मृदुता, कोमलता का भाव होना और मान, मद, अभिमान, अहंकार आदि दुर्गुणों का अभाव होना। किसी अहंकारी की तुलना मादक पदार्थ का सेवन करने वाले नशे में चूर व्यक्ति से से की जाती है। जैसे नशे में चूर व्यक्ति को कोई समझा नहीं सकता, औरों की तो बात ही क्या उसके सगे संबंधी जन भी उसे समझाने में असमर्थ होते हैं, उसी प्रकार प्रमादी, अभिमानी व्यक्ति को भी कोई समझा नहीं सकता।

याद रखिए, जो विनयशील है उसका त्याग दान इत्यादि करना सफल है, फलदायक होता है लेकिन अभिमानी का सब निष्फल है।अभिमानी के बिना अपराध किए ही सब लोग उसके दुश्मन हो जाते हैं, सभी लोग अभिमानी की निंदा करते हैं, उसके किसी भी दुखः में कोई साथ देना नहीं चाहता है और प्रतिपल उसका पतन होते देखना चाहते हैं। अभिमानी व्यक्ति अपनी किसी अनपेक्षित तात्कालिक उपलब्धि पर अपने आप को शक्तिशाली समझने लगता है। अहंकारवश उसके हित/अहित की बात भी उसे समझ में नहीं आती है। वह अपने झूठे मान के लिए छल-कपट करता है तथा वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होने पर क्रोधित हो जाता है। मान कषाय यानी अभिमान के कारण जीव अकड़ में रहता है।

सुविचार के अनुसार अकड़ निर्जीवता का लक्षण है। हरी-भरी डालियां अपने लचीलापन से आंधी तूफान सहन करने की क्षमता रखती है एवं अपने अस्तित्व बचाने के साथ विकसित होती रहती है, लेकिन सूखी डाली जो कड़क रहती है, जो तेज हवा, आंधी-तूफान सहन नहीं कर सकती है, उसकी नियति अंततः पेड़ से कटकर अलग होना ही है। इसी प्रकार अकड़ने वाला व्यक्ति समाज में, परिवार में, कहीं भी स्वीकार्य नहीं होता है। वैसे भी मृत शरीर ही अकड़ता है और ऐसे शरीर को मिट्टी में मिला दिया जाता है यानी उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति झुकना जानता है जिसमें परिस्थिति के अनुसार ढलने की क्षमता है, वही व्यक्ति आत्मा के सहज स्वाभाविक विनय- मार्दव धर्म की आराधना करता है एवं समझौता किए बिना अपना वर्चस्व कायम रख सकता है।

अकसर धन, दौलत, शान और शौकत को ही मनुष्य अपना जीवन समझता है, जबकि ये सभी नाशवान है, क्षणभंगुर हैं ये सभी चीजें एक दिन सबको छोड देंगी या फिर एक दिन मजबूरन इन चीजों को छोडना ही पडेगा। अतः इन तुच्छ नाशवान चीजों के पीछे भागने से अच्छा है कि अभिमान और परिग्रह को छोडा जाये और सभी से विनम्र भाव से व्यवहार करे। सभी को एक न एक दिन जाना ही है, तो सबसे पहले स्वयं को पहचाने। मैं कौन हूं, यह जानने की कोशिश कर। मार्दव धर्म हमें स्वयं की सही वृत्ति को समझने का माध्यम है।

उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेदज्ञान सब भासै।

उत्तम मार्दव धर्म का पालन करने से विनयशीलता का भाव प्रकट होता है एवं विविध भेद ज्ञान समझ में आने लगते है।

दशलक्षण धर्म के एक एक धर्म सम्पूर्ण है, प्रत्येक का अपना महत्व है।

अपनाकर देखिए।

–भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय
जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

हिन्दू मुसलमानों की एकता के प्रतीक एवं वंचित समाज के मसीहा लोक देवता रामसापीर

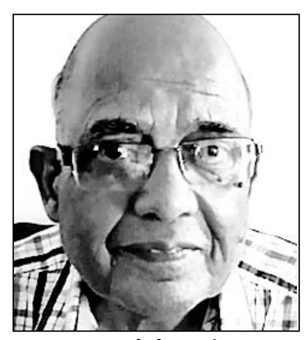

डा. जे.के. गर्ग

विक्रम संवत 1409 की भादवा शुक्ल दूज के दिन पश्चिम राजस्थान के पोकरण शहर के नजदीक रुणिचा नामक स्थान के शासक अजमल के घर बाबा रामदेव का अवतार हुआ था। राजस्थान के जन जन के मसीहा पांच पीरों मे बाबा रामसा पीर का प्रमुख स्थान है। बाबा रामदेव तंवर राजपूत थे जिसे मान्यताओं के मुताबिक भगवान विष्णु के अवतार के रूप में पूजा जाता है। मान्यताओं के मुताबिक राजा अजमल ने पुत्र प्राप्ति हेतु दान पुण्य और अनेकों यज्ञ किये। द्वारकाजी में अजमल जी को भगवान के साक्षात दर्शन हुए तब राजा अजमल ने उनसे उनके घर में उनके पुत्र के रूप में जन्म लेने की याचना की तब भगवान द्वारकानाथ ने राजा अजमल ने कहा मैं तुम्हे वचन देता हूँ कि तुम्हारा पहला बेटा वीरमदेव होगा और दूसरे बेटे के रूप में मै खुद तुम्हारे आपके घर आउंगा।

भगवान ने यह भी कहा कि जब में अवतरित होउंगा तब उस रात आपके राज्य के जितने भी मंदिर है उसमें घंटियां अपने आप बजने लग जायेगी, महल में जो भी पानी होगा वह दूध में बदल जाएगा तथा मुख्य द्वार से जन्म स्थान तक कुमकुम के पैर नजर आयेंगे वहीं आकाशवाणी भी सुनाई देगी और में रामदेव जी के नाम से प्रसिद्ध हो जाउँगा। कहा जाता है कि श्री रामदेव जी के जन्म लेते ही ऐसी सभी चमत्कारिक घटनाएं घटित हुई। समय के साथ-साथ बाबा रामदेव जी की प्रसिद्धि भारतवर्ष के साथ दुनिया के अनेकों देशों में फेल गई। बाबा रामदेव जी से प्रभावित होकर उस समय के हजारों हिन्दू जो मुसलमान बन गये थे पुनः हिन्दू धर्म में परिवर्तित होने लगे।

रारामदेव जी के बचपन की अद्भुत घटनायें एक दिन सुबह रामदेव एवं विरमदेव अपनी माता मैणादे की गोद में खेल रहे तब उनकी मां दूध को गर्म करने के लिये उसे भगोनी में डाल कर चूल्हे पर चढ़ाने चली गई, उसी वक्त रामदेव जी अपनी माता को चमत्कार दिखाने के लिये अपने बड़े भाई विरमदेव जी के गाल पर चुमटी काट दी जिससे विरमदेव को क्रोध आ गया और उन्होंने राम देव को धक्का मार कर गिरा दिया। रामदेवजी गिर गये और रोने लगे हैं। रामदेव जी के रोने की आवाज सुनकर माता मैणादे दूध को चुल्हे पर ही छोड़कर उनके पास आ गई और रामदेव जी गोद में लेकर पुचकारने लगी।

उधर दूध को भगोनी के बाहर गिरता देखती माता मैणादे रामदेवजी को गोदी से नीचे उतारना चाह रही थी किन्तु उन्होंने उस वक्त देखा रामदेवजी अपना हाथ दूध की ओर करके अपनी देव शक्ति से उस बर्तन को चूल्हे से नीचे आसानी से जमीन पर रख दिया। यह चमत्कार देखकर माता मैणादे वहीं पर उपस्थित पिता अजमलजी तथा नोकर-चाकर अचम्भित होकर भगवान द्वारकानाथ की जय जयकार करने लगे। कपड़े के घोड़े को आकाश में उड़ना बालक रामदेव ने अपने पिता से खिलोने वाले घोड़े की जिद की तब राजा अजमल ने खिलोने वाले को चन्दन और मखमली कपडे का घोड़ा बनाने को कहा। कीमती मखमली कपड़ों को देख खिलोने वाले के मन में लालच आ गया और उसने बहुत सारा कपडा अपनी पत्नी के लिये रख लिया और और बहुत कम कपड़े से घोडा बना कर राजा को दे दिया। जब बालक रामदेव घोड़े पर बैठे तो घोड़ा उन्हें लेकर आकाश में चला ग़या। राजा खिलोने बनाने वाले पर गुस्सा होते उसे जेल में डाल दिया। कुछ समय पश्चात, बालक रामदेव वापस घोड़े के साथ आये। खिलोने वाले ने राजसी कपड़े को चुराने की बात कबूल कर रामदेवजी से उसे राजा के क्रोध से बचाने के लिये प्राथना की, बाबा रामदेव ने दया दिखाते हुए उसे माफ़ किया। आज भी, कपड़े वाला घोड़ा बाबा रामदेव की खास बढ़ावा माना जाता है।

रामापीर का प्रसिद्ध मेला उत्तर भारत में धूमधाम गाजेबाजे के साथ हर साल दस दिन भाद्रपद शुक्ल 2 से भाद्रपद शुक्ल 11तक मनाया जाता है इस वर्ष यह मेला 7 17 सितंबर 2023 से 26 सितम्बर 2023 तक मनाया जा रहा है। राजस्थान से ही नहीं गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश से भी हजारों श्रद्धालु यहां दर्शन करने आते हैं। रामदेवरा मेला में हज़ारों भक्त दूर-दूर से बड़े-बड़े समुहों में नाचते गाते-भजन कीर्तन करते हुये पैदल, बसों,कारों, बेलगाड़ियों ट्रेक्टर या अन्य साधनों से आते है मुसलमानों के मसीहा लोक देवता रामदेव जी रामदेव पीर, रामसा पीर, के नामों से जाने जाते हैं।

निसंदेह रामदेवजी का मन्दिर हिन्दू और मुसलमानों की आस्था का केंद्र है और हिन्दुस्तान की गंगा जमुना साँझा संस्कृति की अद्भुत मिशाल पेश करता है इस पवित्र जगह को साम्प्रदायिक सद्भाव संगम कहा जाता है।

रामापीर का प्रसिद्ध मेला उत्तर भारत में धूमधाम गाजेबाजके साथ हर साल दस दिन भाद्रपद शुक्ल 2 से भाद्रपद शुक्ल 11 तक मनाया जाता है इस वर्ष यह मेला 17 सितंबर 2023 से 26 सितम्बर 2023 तक मनाया जा रहा है। राजस्थान से ही नहीं गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश से भी हजारों श्रद्धालु यहां दर्शन करने आते हैं। रामदेवरा मेला में हज़ारों भक्त दूर-दूर से बड़े-बड़े समुहों में नाचते गाते-भजन कीर्तन करते हुये पैदल, बसों, कारों, बेलगाड़ियों ट्रेक्टर या अन्य साधनों से आते है मुसलमानों के मसीहा लोक देवता रामदेव जी रामदेव पीर, रामसा पीर, के नामों से जाने जाते हैं। निसंदेह रामदेवजी का मन्दिर हिन्दू और मुसलमानों की आस्था का केंद्र है और हिन्दुस्तान की गंगा जमुना साँझा संस्कृति की अद्भुत मिशाल पेश करता है इस पवित्र जगह को साम्प्रदायिक सद्भाव संगम स्थल भी कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जन के सेवक और उनके कष्टों को मिटाने वाले रामसापीर रामदेवजी ने राजा बनकर नही अपितु जनसेवक बनकर गरीबों, दलितों, असाध्य बीमारियों से पीड़ित रोगियों व जरुरत मंदों की हर सम्भव से सहायता और सेवा की। उनकी दया के पात्र हिन्दुओं के साथ मुस्लिम भी होते थे। संवत् 1442 में अपने हाथ में श्रीफल लेकर अपने सारे बुजुर्गों को प्रणाम किया, सभी उपस्थित भक्तों ने पत्र पुष्प चढ़ाकर रामदेव जी का श्रद्धा से अन्तिम पूजन किया। रामदेव जी ने समाधी में खड़े होकर सब के प्रति अपने अन्तिम उपदेश देते हुए कहा प्रति माह की शुक्ल पक्ष की दूज को पूजा पाठ, भजन कीर्तन करके पर्वोत्सव मनाना, रात्रि जागरण करना। प्रतिवर्ष मेरे जन्मोत्सव के उपलक्ष में तथा अन्तर्ध्यान समाधि होने की स्मृति में मेरे समाधि स्तर पर मेला लगेगा। मेरे समाधी पूजन में किसी से भेदभाव मत रखना। मैं सदैव अपने भक्तों के साथ रहुँगा ऐसा कहकर रामदेव जी महाराज ने समाधि ले ली।

रामदेव मन्दिर मंदिर के समीप ही स्वयं रामदेव जी द्वारा खुदवाई गई परचा बावड़ी अपनी स्थापत्य कला में बेजोड़ है। इस बावड़ी का निर्माण फाल्गुन सुदी तृतीया विक्रम संवत् 1897 को पूर्ण हुआ। बावड़ी का जल शुद्ध व मीठा है। बावड़ी का निर्माण रामदेव जी के कहने पर बाणिया बोयता ने करवाया था। बावड़ी पर लगे चार शिलालेखों से पता चलता है कि घामट गांव के पालीवाल ब्राह्मणों ने इसका पुनर्निर्माण कराया था। इस बावड़ी का जल रामदेवजी का अभिषेक करने के काम में लाया जाता है।

समाधी स्थल के पास ही रामदेव जी की परम भक्त शिष्या डाली बाई की समाधि और कंगन हैं। डाली बाई का कंगन पत्थर से बना है और इसके प्रति धर्मालुओं में गहरी आस्था है। मान्यता के अनुसार इस कंगन के अन्दर से होकर निकलने पर सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। मंदिर आने वाले लोग इस कंगन के अन्दर से निकलने पर ही अपनी यात्रा पूर्ण मानते हैं।

रामदेवरा मंदिर बीकानेर के महाराजा श्री गंगा सिंह जी ने रामदेवजी के वर्तमान मंदिर का निर्माण सन् 1939 में करवाया था, उस वक्त इसके निर्माण पर 57 हजार रुपये व्यय हुए थे। रामदेवरा मंदिर अपने आप में अनोखा है क्योंकि यहाँ बाबा रामदेव की मूर्ति भी है और मजार भी। माना जाता है कि बाबा के पवित्रा राम सरोवर में स्नान से अनेक चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है। रामदेवरा मंदिर में आस पास के श्रद्धालुओं के साथ साथ राजस्थान के दूरदराज एवं गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश आदि प्रान्तों के हजारों श्रद्धालु भी आते हैं। पैदल यात्रियों के समूह मेले के दिन से बहुत पहले से बाबा की जयकार करते हुये, भजन कीर्तन करते हुए बाबा के दर्शन करने और मनोती मांगने पहुचते है।

इन श्रद्धालुओं के चाय-पानी तथा खाने पीने के लिए रास्तों में अनगनित भंडारे स्थानीय भक्तों दुवारा लगाये जाते हैं। यहां कोई न छोटा होता है न कोई बड़ा। यहां मंदिर में नारियल, पूजन सामग्री और प्रसाद की भेंट चढाई जाती है। मंदिर के बाहर और धर्मशालाओं में सैकड़ों यात्रियों के खाने-पीने का इंतजाम होता है। मेले के दौरान बाबा के मंदिर में दर्शन के लिए चार से पांच किलोमीटर लंबी कतारें लगती हैं। निसंतान दम्पत्ति कामना से अनेक अनुष्ठान करते हैं तो मनौती पूरी होने वाले बच्चों का झड़ूला उतारते हैं और सवामणी करते हैं। रोगी रोगमुक्त होने की आशा करते हैं तो दुखी आत्माएं सुख प्राप्ति की। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सैकड़ो श्रद्धालु पहले जोधपुर में बाबा के गुरु के मसूरिया पहाड़ी स्थित मंदिर में भी दर्शन करना नहीं भूलते हैं और उसके बाद जैसलमेर की तरफ रामदेवरा मन्दिर की तरफ कूच करते हैं। बहुत से लोग रामदेवरा में मन्नत भी मांगते हैं और मुराद पूरी होने पर कपड़े का घोड़ा बनाकर मंदिर में चढ़ाते हैं। निःसंदेह रामदेवजी का मन्दिर हिन्दू और मुसलमानों की आस्था का केंद्र है और हिन्दुस्तान की साँझा संस्कृती की मिशाल पेश करता है।

–डा. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कॉलेज शिक्षा जयपुर

मां शाकंभरी का मेला भादवा सुदी अष्टमी को भरेगा

सांभरझील, (निसं)। यहां से 25 किलोमीटर सुदूर पहाड़ी पर स्थित मां शाकंभरी का भादवा सुदी अष्टमी को वार्षिक मेला भरेगा। मेले से एक दिन पहले आसपास के क्षेत्रों से माता के दरबार के लिए पदयात्रियों का जत्था भी रवाना होगा।

सांभर नकाशा चौक स्थित माताजी के चबूतरा से भी पूजा अर्चना के बाद रवाना होंगे। सैंकड़ों की तादाद में माता के दर्शन व परिवार की खुशहाली के लिए महिला श्रद्धालु व भक्तगण दूरदराज से भी यहां पहुंचते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माना जाता है कि शाक पर आधारित तपस्या के कारण शाकंभरी नाम पड़ा। इस तपस्या के बाद यह स्थान हराभरा हो गया। नंदीकेश्वर मेला कमेटी के अध्यक्ष कुलदीप व्यास ने बताया कि

सांभरझील में सुदूर पहाड़ी पर स्थित मां शाकंभरी की प्रतिमा।

शाकम्भरी को दुर्गा का अवतार भी माना जाता है। शाकंभरी माता के देशभर में तीन शक्तिपीठ है। इनमें से सबसे प्राचीन शक्तिपीठ सांभर (शाकंभर) कस्बे में स्थित है। मंदिर करीब 2500 साल से भी अधिक पुराना है। शाकंभरी माता चौहान वंश की कुलदेवी है लेकिन, माता को अन्य कई धर्म और समाज के लोग पूरी श्रद्धा के साथ पूजते हैं। इस मंदिर में पूजा अर्चना का जिम्मा व्यास पुजारी प्रमुखता से अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं। यहां पर मान्यता पूरी होने पर जैसे परिवारों में विवाह, बच्चे का जन्म जैसे शुभ कार्य होने पर यहां धोक लगाने की परंपरा है। मंदिर में भादवा सुदी अष्टमी को मेला आयोजित होता है। दोनों ही नवरात्रों में माता के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से भक्त आते हैं।

■ यहां प्रतिमा के संबंध में मान्यता है कि देवी की यह प्रसिद्ध मूर्ति भूमि से स्वतः प्रकट हुई है

यहां प्रतिमा के संबंध में मान्यता है कि देवी की यह प्रसिद्ध मूर्ति भूमि से स्वतः प्रकट हुई है। विभिन्न लेखों के अनुसार, चौहान वंश के शासक वासुदेव ने सातवीं सदी में सांभर झील और सांभर नगर की स्थापना शाकंभरी माता के मन्दिर के पास की थी। शाकंभरी के नाम से ही शाकंभर नगर प्रसिद्ध हुआ और कालांतर में धीरे-धीरे अपभ्रंश सांभर के नाम से जाना जाने लगा। महाभारत, शिव पुराण और मार्कण्डेय पुराण जैसे धर्म ग्रंथों में माता शाकंभरी का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार,100 साल तक निर्जन स्थान पर जहां बारिश भी नहीं होती थी माता ने तपस्या की थी। इस तपस्या के दौरान माता ने केवल महीने में एक बार शाक यानि वनस्पति का सेवन किया था।

राशिफल

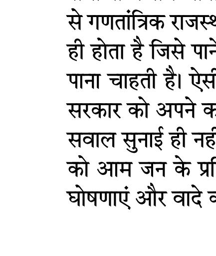

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 20 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र दिन 2:59 तक, विष्कुम्भ योग रात्रि 3:05 तक, बालव करण दिन 2:17 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 8:44 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

कुमार योग 2:59 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग दिन 2:59 से आरम्भ होगा। आज ऋषि पंचमी, भाई पांच, जैन सम्वत्सरी (पचमी पक्ष) है। आज रक्षा पंचमी, गुरू पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:19 तक, शुभ 10:50 से 12:20 तक, चर 3:22 से 4:52 तक, लाभ 4:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:18, सूर्यास्त 6:24

मेष
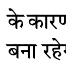
अपनां कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
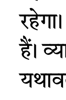
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
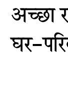
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कर्क
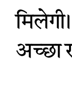
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
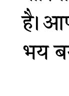
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों में परेशानी हो सकती है। आपसी वाद-विवाद, मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
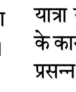
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
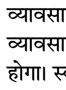
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक
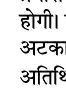
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
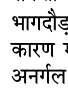
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

मकर
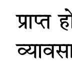
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

कुंभ
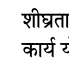
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन
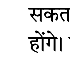
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।